अंक 20 माह: मार्च 2026

विश्रुत
मासिक पत्रिका

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Madhya Pradesh, Khandwa
AN AISECT GROUP UNIVERSITY

विश्वविद्यालय मासिक पत्रिका
“ऊर्जस्वला वर्चस्वला अतिनिष्चला विजये
We are Energetic, Influential and are Always Committed”

मास का सूत्र

“ न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रम्, न च स्वास्थ्यात् परं सुखम्।”

— आचार्य चरक

संपादकीय
सेवा, संवेदना और विज्ञान का समन्वय

भारतीय संस्कृति में सेवा को सर्वोच्च धर्म का स्थान प्राप्त है, और चिकित्सा सेवा को 'परमो धर्मः' के रूप में प्रतिष्ठा मिली है। आदिकाल से ही परा-चिकित्सा केवल उपचार की विधा नहीं रही, बल्कि यह करुणा, संवेदना और मानव कल्याण की एक सतत प्रवाहित परंपरा का स्वर रही है।

इसी भावभूमि पर महर्षि चरक का यह वचन मार्गदर्शक दीप की भाँति प्रकाशित होता है—

“वैद्य वह है जो रोगी के दुःख को समझकर उसे स्वास्थ्य की ओर ले जाए।”

यह विचार चिकित्सा को केवल ज्ञान और कौशल की सीमा से ऊपर उठाकर उसे मानवीय स्पर्श और आत्मीयता से संपन्न करता है।

इसी शाश्वत दृष्टि को आत्मसात करते हुए Maharshi Charak School of Paramedical Science आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और भारतीय जीवन- मूल्यों का एक संतुलित एवं सृजनात्मक समन्वय प्रस्तुत करता है। यहाँ परा-चिकित्सा शिक्षा को केवल तकनीकी दक्षता का माध्यम न मानकर, उसे सेवा-संस्कार, नैतिकता और मानवीय उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा गया है।

आज जब चिकित्सा क्षेत्र निरंतर प्रौद्योगिकी और नवाचार के नए आयाम छू रहा है, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि इस विकास की गति के साथ मानवीय संवेदनाएँ भी समान रूप से सशक्त बनी रहें। यह अध्ययनशाला विद्यार्थियों को इस प्रकार संस्कारित करती है कि वे रोगी को मात्र एक चिकित्सीय स्थिति के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील अस्तित्व के रूप में समझें—जहाँ उपचार केवल औषधि से नहीं, बल्कि सहानुभूति,

धैर्य और समर्पण से पूर्ण होता है।

यहाँ शिक्षा एक साधना है, सेवा एक संस्कार है और चिकित्सा एक उत्तरदायित्व—जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी अपने ज्ञान, कौशल और संवेदनशीलता के माध्यम से समाज के स्वास्थ्य और कल्याण में सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित होता है।

इस प्रकार, यह अध्ययनशाला उस अनवरत परंपरा की संवाहक है, जहाँ चिकित्सा विज्ञान केवल एक सेवा-पथ नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण का एक पावन और प्रतिष्ठित जीवन-धर्म बनकर प्रतिष्ठित होता है।

ज्ञान, सेवा और संवेदना का संगम : अध्ययनशाला परिचय”

Maharshi Charak School of Paramedical Science, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय की तेरह अध्ययनशालाओं में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट अध्ययनशाला है। यह स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का एक प्रतिष्ठित केंद्र है, जहाँ चिकित्सा और सेवा का समन्वय विद्यार्थियों के समग्र विकास को दिशा प्रदान करता है। यहाँ शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं, बल्कि उसे मानवीय संवेदना, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर एक समग्र दृष्टि विकसित की जाती है।

यह अध्ययनशाला आधुनिक चिकित्सा तकनीकों, अनुभवात्मक (कर्मप्रधान) अधिगम और नैतिक मूल्यों पर आधारित सुदृढ़ शैक्षणिक वातावरण प्रदान करती है। यहाँ स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध स्तर पर स्वास्थ्य विज्ञान एवं पैरामेडिकल शिक्षा का संचालन किया जाता है, जो विद्यार्थियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप सक्षम एवं दक्ष बनाती है। अनुभवी संकाय, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण की सुव्यवस्थित व्यवस्था के माध्यम से विद्यार्थियों को वास्तविक चिकित्सा परिस्थितियों के लिए तैयार किया जाता है। अध्ययनशाला का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे कुशल, संवेदनशील और उत्तरदायी स्वास्थ्यकर्मियों का निर्माण करना है, जो समाज की सेवा में समर्पित रहकर राष्ट्र के स्वास्थ्य तंत्र को सुदृढ़ बनाने में सक्रिय योगदान दें।

संचालित पाठ्यक्रम (Programmes / Courses)

- Bachelor of Physiotherapy (BPT)
- Bachelor of Medical Laboratory Technology
- Diploma in Medical Laboratory Technology

हमारी दृष्टि (Vision)

भारत को चिकित्सा शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की ओर अग्रसर करना तथा उच्च गुणवत्ता, आत्मनिर्भर और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान का निर्माण करना।

हमारा मिशन (Mission)

उत्कृष्ट, नैतिक एवं व्यवहारिक चिकित्सा शिक्षा प्रदान करते हुए विद्यार्थियों में दक्षता, संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व का विकास करना तथा सेवा और ज्ञान के माध्यम से समाज के स्वास्थ्य स्तर को सुदृढ़ बनाना।

प्रगति और परंपरा का संगम

Maharshi Charak School of Paramedical Science भारतीय आयुर्विज्ञान की प्राचीन परंपरा और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। जहाँ एक ओर महर्षि चरक की ज्ञान-परंपरा एवं भारतीय चिकित्सा दर्शन से प्रेरणा ली जाती है, वहीं दूसरी ओर अत्याधुनिक चिकित्सा तकनीकों, नवाचार एवं वैज्ञानिक शोध को आत्मसात किया जाता है।

यह समन्वय विद्यार्थियों को न केवल तकनीकी रूप से दक्ष बनाता है, बल्कि उन्हें सेवा-भाव, करुणा, अनुशासन और नैतिक मूल्यों से भी सशक्त करता है। अध्ययनशाला द्वारा समय-समय पर कार्यशालाएँ, स्वास्थ्य शिविर, प्रशिक्षण कार्यक्रम, खेलकूद गतिविधियाँ, सांस्कृतिक आयोजन तथा सामुदायिक सहभागिता आधारित पहलें आयोजित की जाती हैं, जो विद्यार्थियों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इस क्रम में विद्यार्थियों ने न केवल परिसर में, बल्कि गाँव-गाँव जाकर जागरूकता अभियानों में भी सक्रिय भागीदारी की है। विभिन्न स्थानों पर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से स्वास्थ्य एवं सामाजिक संदेशों का प्रसार किया गया, जिससे जनमानस में जागरूकता का विस्तार हुआ। साथ ही स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों का आयोजन कर ग्रामीण समुदाय को स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील बनाया गया।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों ने विभिन्न स्थानों पर रक्तदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों में भाग लेकर समाज सेवा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। विशेष रूप से विद्यालय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण, एनीमिया रोग की पहचान एवं उसके प्रति जागरूकता अभियान चलाए गए, जिससे बालिकाओं एवं महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति सकारात्मक समझ विकसित हुई।

छात्र सहभागिता एवं उपलब्धियाँ

- खेल प्रतियोगिताओं एवं महिला खेल टूर्नामेंट में सहभागिता
- महिला दिवस पर नुक्कड़ नाटक एवं सामाजिक संदेश आधारित प्रस्तुतियाँ
- स्टार्टअप एक्सपो में नवाचार परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण
- काइनेसियोलॉजी टेपिंग एवं स्पाइनल इंजरी पर कार्यशालाओं में सहभागिता
- AIDS दिवस पर नाटक, पोस्टर, क्विज एवं लेखन प्रतियोगिताएँ
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर संवाद एवं पोस्टर निर्माण गतिविधियाँ
- शबरी पत्रिका हेतु लेखन एवं रचनात्मक योगदान
- वार्षिक समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ (नृत्य, गायन, एंकरिंग)
- हिंदी पखवाड़ा एवं वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में सहभागिता
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य जागरूकता, नुक्कड़ नाटक एवं शिविरों का आयोजन
- रक्त परीक्षण शिविर एवं एनीमिया जागरूकता अभियान में सक्रिय भागीदारी

इन सभी गतिविधियों से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययनशाला का उद्देश्य केवल अकादमिक शिक्षा नहीं, बल्कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक स्वास्थ्य जागरूकता और सेवा भावना को पहुँचाना भी है।

नवांकुर : सृजनशीलता और युवा स्वर – छात्र रचनाएँ

इस खंड में विद्यार्थियों की भावनात्मक अभिव्यक्ति, अनुभव और सृजनशील दृष्टिकोण को कविता, ब्लॉग और संक्षिप्त अनुभवों के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो उनके मानवीय और वैज्ञानिक चिंतन को दर्शाते हैं।

1. कविता – "सेवा का दीप" – सलोनी पटेल (BPT II Year)
हर दर्द में छुपा है एक संसार,
हर आँसू में बसी है पुकार।
जो हाथ थाम ले किसी की राह,
वही है जीवन का सच्चा आधार।
सेवा का दीप जब जलता है,
अंधकार भी उजाला बन जाता है।

2. कविता – "गाँव की धड़कन" – रिद्धि दशोरे (BPT II Year)
धूल भरी पगडंडी पर, उम्मीद चलती है,
मिट्टी की खुशबू में, जिंदगी पलती है।
नुक्कड़ नाटकों की आवाज़ जब गूँजती है,
हर आँख में जागरूकता की लौ जलती है।

3. ब्लॉग – "एक स्वास्थ्य शिविर का अनुभव" – नेहा यादव (BPT IV Year)
ग्रामीण स्वास्थ्य शिविर में भाग लेना मेरे लिए एक गहन अनुभव रहा। वहाँ मरीजों की भीड़, उनकी समस्याएँ और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की कमी ने मुझे यह सिखाया कि चिकित्सा केवल उपचार नहीं, बल्कि संवेदना और समझ का नाम है। हर मरीज के चेहरे पर विश्वास और उम्मीद देखना मेरे लिए प्रेरणादायक था।

4. अनुभव – "नुक्कड़ नाटक की सीख" – सलोनी पटेल (BPT II Year)
महिला दिवस पर किए गए नुक्कड़ नाटक के दौरान हमने जाना कि समाज में छोटे प्रयास भी बड़े परिवर्तन ला सकते हैं। लोगों की प्रतिक्रिया और जुड़ाव ने हमें यह समझाया कि कला के माध्यम से भी स्वास्थ्य और सामाजिक संदेश प्रभावी रूप से पहुँचाए जा सकते हैं।

5. संक्षिप्त अनुभव – "रक्त परीक्षण शिविर" – अंजलि वर्मा (BMLT I Year)
रक्त परीक्षण शिविर में भाग लेते समय मैंने प्रयोगशाला तकनीकों को वास्तविक जीवन में उपयोग होते देखा। यह अनुभव मेरे लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण अवसर था, जहाँ मैंने तकनीक और सेवा दोनों का महत्व समझा।

6. कविता – "मानवता का स्वर" – पूजा यादव (BPT II Year)
न कोई ऊँच-नीच यहाँ,
सबमें एक ही प्राण बसे।
दवा से पहले दुआ मिले,
तो हर रोग अपने आप घटे।

7. ब्लॉग – "एनीमिया जागरूकता यात्रा" – हिमांशु वर्मा (BMLT II Year)
गाँव-गाँव जाकर एनीमिया के प्रति जागरूकता फैलाना एक महत्वपूर्ण अनुभव रहा। हमने छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण किए और उन्हें पोषण के महत्व के बारे में समझाया। यह अनुभव बताता है कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह समाज के काम आए।

8. अनुभव – "सेवा ही जीवन है" – आयुषी अटूटकर (BPT III Year)
विभिन्न स्वास्थ्य अभियानों और जागरूकता शिविरों में भाग लेकर मुझे यह समझ आया कि चिकित्सा केवल एक पेशा नहीं, बल्कि जीवन को समर्पित करने की प्रक्रिया है। हर अनुभव ने मुझे और अधिक जिम्मेदार और संवेदनशील बनाया है।

अंक 20, क्रमांक -4,
माह: मार्च 2026

विश्वत

ज्ञान, कौशल और सेवा: छात्र विकास के सशक्त आयाम

Maharshi Charak School of Paramedical Science द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, व्यावहारिक ज्ञान एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विभिन्न छात्र विकास कार्यक्रमों, कार्यशालाओं एवं स्वास्थ्य जागरूकता सेमिनारों का सफल आयोजन किया गया। इन गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित न रखते हुए उन्हें समाजोपयोगी, संवेदनशील एवं सेवा-भाव से परिपूर्ण स्वास्थ्यकर्मी के रूप में तैयार करना रहा है।

आयोजित प्रमुख गतिविधियाँ

- वानमाली जी की 113वीं जयंती एवं रक्तदान शिविर का आयोजन, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर समाज सेवा एवं रक्तदान के महत्व को आत्मसात किया।
- स्वास्थ्य वार्ता – "Let's Understand Cancer" के माध्यम से विद्यार्थियों को कैंसर रोग की जानकारी, रोकथाम एवं जागरूकता के विविध पहलुओं से अवगत कराया गया।
- विश्व फिजियोथेरेपी दिवस समारोह के अंतर्गत फिजियोथेरेपी के महत्व, उसके आधुनिक उपयोग एवं स्वास्थ्य संरक्षण में इसकी भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई।
- रक्तदान शिविर का आयोजन कर विद्यार्थियों एवं स्टाफ को मानव सेवा एवं जीवन रक्षा के इस महान कार्य के लिए प्रेरित किया गया।

इन सभी कार्यक्रमों ने विद्यार्थियों में न केवल शैक्षणिक एवं व्यावहारिक दक्षता को बढ़ाया, बल्कि उनमें सेवा, संवेदना, स्वास्थ्य जागरूकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी सुदृढ़ किया। यह अध्ययनशाला निरंतर ऐसे आयोजनों के माध्यम से "सीखने के साथ सेवा" की परंपरा को आगे बढ़ा रही है।

संपादकीय मंडल

संरक्षक : प्रो. (डॉ.) अरुण रमेश जोशी,
कुलगुरु, सी. वी. आर. यू. खंडवा,
प्रधान संपादक : श्री रवि चतुर्वेदी,
कुलसचिव, सी. वी. आर. यू., खंडवा,
कार्यकारी संपादक : प्रो. नेहा शुक्ला, मुख्य प्रकाशन अधिकारी
सदस्य : 1. डॉ. सीमा शर्मा, डायरेक्टर रिसर्च एंड इनोवेशन
2. डॉ. गणेश मलगाया, डायरेक्टर केंद्रीय प्रयोगशाला समन्वयक
3. प्रो. योगेश महाजन, अधिष्ठाता अकादमिक
संकल्पना : श्री प्रमोद पटेल, ग्राफिक डिजाइनर
प्रकाशन विभाग
संचार एवं प्रसार : श्री मनदीप सिंह पंवार, अध्ययनशाला समन्वयक
आर्यभट्ट स्कूल ऑफ डिजिटल लर्निंग
श्री हमज़ा मलिक,
वनमाली केन्द्रीय ग्रंथालय

वृतांत

23/03/2026

विश्व जल दिवस पर "जन जागृति से -जल जागृति" पर परिचर्चा हुई (जल संरक्षण के लिए "जय जल, जय जीवन" की शपथ ली)

- खंडवा स्थित Dr. C. V. Raman University में विश्व जल दिवस पर "जन जागृति से जल जागृति तक" विषय पर परिचर्चा आयोजित हुई।
- मुख्य अतिथि जल संरक्षण विशेषज्ञ Anil Saini ने जल संकट और संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।
- कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति Dr. Arun Joshi ने की, जबकि कुलसचिव Ravi Chaturvedi ने जल के दुरुपयोग पर चिंता जताई।
- इस दौरान छात्रों को वाटर वोलेंटियर बैच प्रदान कर जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई।
- कार्यक्रम में जल शुद्धिकरण, वाटर हार्वेस्टिंग और नदी विज्ञान पर शोध एवं नए डिप्लोमा कोर्स की जानकारी दी गई।
- अंत में सभी ने "जय जल, जय जीवन" का संकल्प लेकर जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने का संदेश दिया।

25/03/2026

निमाड़ लोकपर्व गणगौर पर तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न (गणगौर प्रतिमा निर्माण, लोकगीत गायन एवं नृत्य प्रस्तुत किए गए)

खंडवा स्थित डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय में निमाड़ लोकपर्व गणगौर पर आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला का सफल समापन हुआ। कार्यक्रम कुलगुरु अरुण रमेश जोशी के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि कुलसचिव Ravi Chaturvedi एवं श्रीमती गीतिका चतुर्वेदी उपस्थित रहीं।

कार्यशाला के दौरान निबंध लेखन, गणगौर प्रतिमा निर्माण तथा लोकगीत एवं नृत्य की प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं।

समापन अवसर पर इटारिया ग्राम की लोकमंडली और छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर निमाड़ की समृद्ध लोकसंस्कृति को जीवंत किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रही।